Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJIF 2016 = 4.44, www.srjis.com
UGC ApprovedSr. No.48612, AUG-SEPT 2017, VOL- 4/23
https://doi.org/10.21922/srjhsel.v4i23.9652

हिन्दी शिक्षण में कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों का महत्व

आशा यादव[1], Ph. D. & प्रवीण[2]

शोधार्थी , शिक्षा विभाग, गुरू काशी यूनिवसिटी, तंलवड़ी साबों (बठिण्डा) पंजाब।

Abstract

वर्तमान समय में शिक्षा के सभी स्तरों पर शैक्षिक तकनीकी का उपयोग प्रमुखता से किया जा रहा है। वस्तुत हिन्दी शिक्षण को प्रभावकारी या रोचक बनाने के लिए शैक्षिक तकनीकी के कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों का वर्णन और उनका हिन्दी शिक्षण में महत्व इस शोध लेख का मुख्य उद्वेश्य है। पाठ्यक्रम के अन्य विषयों की भांति हिन्दी में भी कशल अनुदेशनात्मक नीतियां उपयोगी हो सकते है। प्रोफेसर वैबर के सिद्वध किया है कि ज्ञान ग्रहण की प्रक्रिया में 40 प्रतिशत ज्ञान हम आँखों के माध्यम से, 25 प्रतिशत श्रवणों के माध्यम से, 17 प्रतिशत हम स्पर्श के द्वारा प्राप्त करते है। इस प्रकार नई तकनीकी द्वारा दृश्य एवम् श्रव्य उपकरणों के द्वारा हमें अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त होता है। यह ज्ञान अप्रेक्षाकृत अधिक स्थायी होता है। इसलिए कुशल अनुदेशनात्मक साधनों को हिन्दी भाषा के शिक्षण में प्रयुक्त करके हम उसे सरल, सहजग्राह्य, स्पष्ट, रूचिकर, बोधग्रम्य, प्रभावाशाली एवम् प्रेरक बना सकते है।

मूल शब्द–*कुशल अनुदेशनात्मक नीतियां, हिन्दी शिक्षण ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना – हम विज्ञान एवं तकनीकी के युग में रह रहे है। मनुष्य की कार्य प्रक्रियाओं तथा उसके उत्पादन में विज्ञान और तकनीकी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा तकनीकी का ही एक भाग कुशल अनुदेशनात्मक नीतियाँ है। कुशल अनुदेशनात्मक नीतियां उन युक्तियों का समूह है जो अधिगम के सुनिश्चित् उद्वेश्यों की प्राप्ति के लिए नई तकनीकी का प्रयोग किया जाता है। इसमें अधिगम के लिए कप्यूटर, पावर पॉइट, सफेद बोर्ड, सी.डी. कैम्पैक्ट डिस्क , प्रोजेक्टर आदि के प्रयोग से शिक्षण क्रिया अधिक रोचक बनाई जाती है। शिक्षण – प्रक्रिया को सुविधापूर्ण एवं शिक्षा उद्वेश्यों को सवृंद्व बना कर यह शिक्षक के कार्य को अधिक कुशलता प्रदान करने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान कर रही है। मनोविज्ञान तथा अन्य सम्बन्धित क्षेत्रों में विकसित धारणाओं को विज्ञान एवं तकनीकी के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त किया जा सकता है। इस शोध लेख में हिन्दी शिक्षण में कुशल अनुदेशानात्मक नीतियों द्वारा कंम्यूटर, पावर पाइॅट, सफेद बोर्ड, प्रोजैक्टर, सी.डी या डी.वी.डी आदि के प्रयोग द्वारा हिन्दी व्याकरण हिन्दी भाषा का उचित उच्चारण, और लिखित रूप में विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। हिन्दी शिक्षण की पुरानी विधियों से कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों का प्रयोग अधिक उपयोगी हो सकता है। इसके प्रयोग से आने वाले वर्षो में हिन्दी शिक्षण या हिन्दी भाषा के विकास में स्कूलों, कालेजों तथा विश्वविद्यालयों के कार्यो में क्रांतिकारी परिवर्तनों की सम्भावना हैं । स्मार्ट तकनीकी का शिक्षा और अध्यापन कार्य में महत्व निरन्तर बढ़ रहा है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कुशल अनुदेशनात्मक नीतियां क्या है ?

कुशल अनुदेशनात्मक नीतियाँ उन युक्तियों का समूह है जो अधिगम के सुनिश्चित उद्वेश्यों की प्राप्ति के लिये प्रयुक्त की जाती है। अधिगम के विशिष्ट उद्वेश्यों की प्राप्ति के लिये अनुदेशन में मनोवैज्ञानिक, सामाजिक एवं वैज्ञानिक सिद्वान्तों एवं ज्ञान के प्रयोग के लिए आधुनिक तकनीकी का प्रयोग द्वारा दिया गया शिक्षण प्रक्रिया है। इसमें शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली और रोचक बनाने के लिए और हिन्दी साहित्य और भाषा के समझने के लिए कंम्यूटर, सफेद बोर्ड, पावर पॉइट, सी.डी, प्रोजेक्टर आदि की सहायता से श्रव्य–दृश्य साधनों का प्रयोग किया जाता है।

Mac Murin (मैक्मुरिन) के कथनानुसार– ''अनुदेशनात्मक नीतियॉ'' विशिष्ट उद्वेश्यों के लिए समूची अधिगम शिक्षण के विधिवत् निर्माण, कार्यान्वयन एवं मूल्याकंन का नाम है। यह मानवीय अधिगम एंव सम्प्रेषण के अनुसन्धान पर आधारित होती है। अनुदेशन को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिये मानवीय एंव गैर मानवीय संसाधनों का मिश्रित प्रयोग करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में भी शिक्षण अधिगम को अधिक प्रभावशाली, स्थायी एवं वास्तविक बनाने के हेतु शिक्षण के सहायक साधनों विशेषकर स्वनिर्मित साधनों के प्रयोग पर बल दिया गया है।

कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों की धारणायें :–

1. विद्यार्थी अपनी आवश्यकतओं , योग्यताओ एंव क्षमताओं के अनुसार अधिगम प्राप्त कर सकता है।
2. अनुदेशनात्मक तकनीकी की नीतियों, युक्तियों एवं तकनीकी की सहायता से अधिगम लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।
3. विषय – वस्तु को छोटे–छोटे विभिन्न तत्वों में विभाजित किया जा सकता है। प्रत्येक तत्व का स्वतन्त्र रूप से प्रस्तुतीकरण किया जा सकता है।
4. तत्वों को तर्कसंगत क्रम से संगठित कर के समुचित अधिगम स्थितियां निर्मित की जा सकती है।
5. अनुदेशन की सहायता से विद्यार्थियों के लिए निरन्तर पुनबर्लन की व्यवस्था की जा सकती है।

कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों के उद्वेश्य, महत्व या उपयोगिता –

1. विभिन्न बिन्दुओं तथा अवधारणाओं को स्पष्ट करने में कुशल अनुदेशानात्मक नीतियों बहुत उपयोगी सिद्व होती है।
2. विद्यार्थियों के ध्यान को आकर्षित करने और पाठ के प्रति रूचि उत्पन्न करने में सहायक सिद्व होती है।
3. हमारी संवेदनाओं के अत्युत्तम अभिपरक है। यह अधिगम में रूचि को उद्वीप्त करते है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

4. ज्ञानेन्दियों को ज्ञान का प्रवेश द्वार कहा जाता हैं अनुदेशनात्मक नीतियों ज्ञानेन्द्रियों के अधिकतम प्रयोग में सहायता प्रदान करते है। और इस प्रकार विद्यार्थियों के लिये ज्ञान को सुगम बनाते है।
5. इन नीतियों से समय एवं श्रम की बचत में सहायता होती है। इन के प्रयोग से कई कठिन अवधारणाओं को समझना सुगम हो जाता है।
6. विद्यार्थियों में व्यापक वैयक्तिक विभिन्नताये होती है। कई विद्यार्थी श्रवण से अधिक सीखते है। अनेकों की प्रदर्शन से सहायता की जाती है। तो अनेक करने से सीखते है। विभिन्न प्रकार की कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों के प्रयोग से विद्यार्थियों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक सिद्व होती है।
7. कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों के प्रयोग से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया उद्वीप्त एवं सक्रिय बन जाती है। निष्क्रिय अधिगम शिक्षण एवं शिक्षा के उद्वेश्यों की पूर्ति में सहायक नही हो सकता। कुशल अनुदेशात्मक नीतियों का प्रयोग कक्षा के निष्क्रिम पर्यावरण को सक्रिय एवं सजीव बना देता है।
8. ये नीतियां प्रविधियों में विविधता उत्पन्न करती है। जब विद्यार्थियों को इन की सहायता से पढ़ाया जाता है। ता वे नवीनता का अनुभव करते है। विविधता रूचि उत्पन्न करती है। शिक्षण अधिगम को अभिप्रेरित करती है।
9. इनके प्रयोग से विद्यार्थियों में वैज्ञानिक रूचि विकसित होती है। सुने हुये तथ्यों पर सहमत होने की अप्रेक्षा देखकर तथ्यों को समझते हैं वास्तविक अवलोकन तथा प्रयोगों द्वारा उन में समान्यीकरण की भावना विकसित होती है।
10. इन नीतियों से कक्षा में सीखा गया ज्ञान अन्य परिस्थितियों में प्रयोग करने में स्थायी होता है। इसे अधिगम का स्थानान्तरण अधिक होता है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

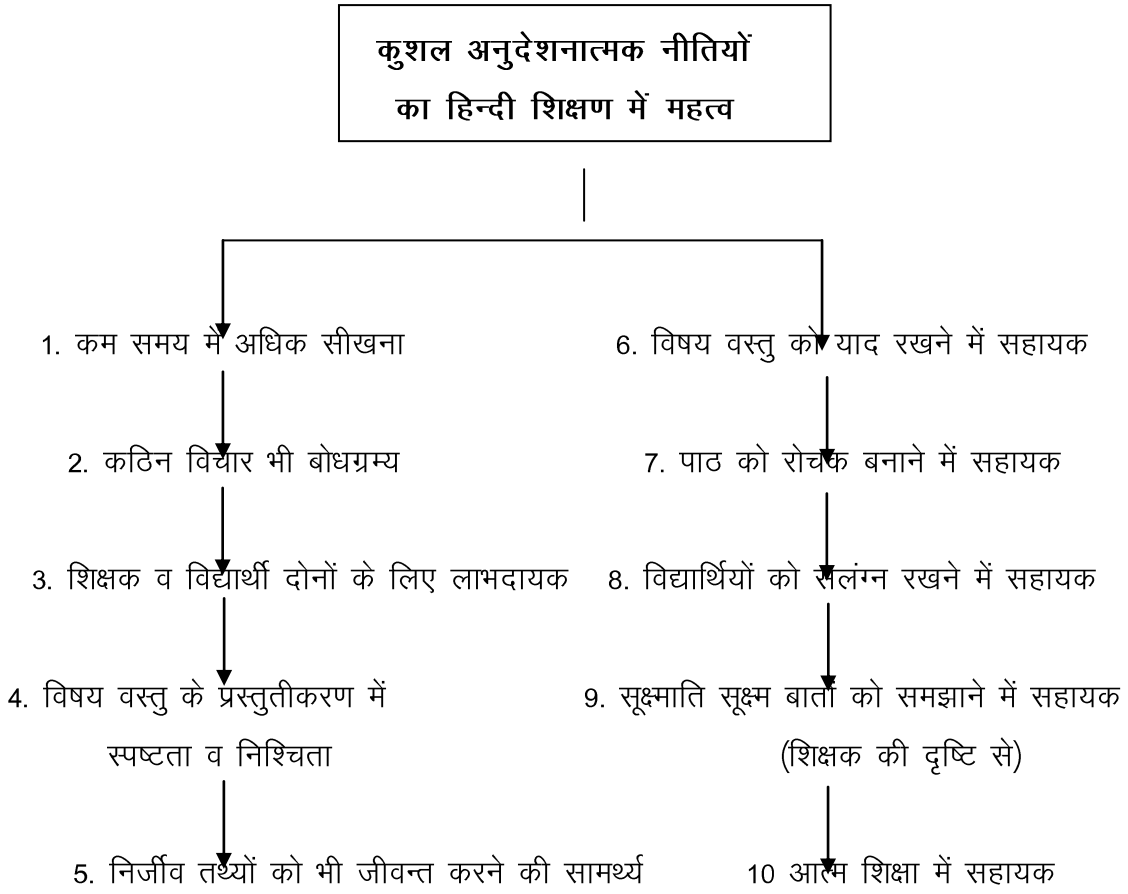

1. भाषा शिक्षण में बालकों की बोलचाल – उच्चारण का विशिष्ट महत्व होता है। पेस्टालाची ने इसलिए कहा था कि, मैं भाषा की शिक्षा मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रदान करना चाहता हूँ। इसी कारण गुड महोदय ने पेस्टालाजी के विचारों पर कहा है कि उनकी छात्रों के मौखिक शिक्षण, मौखिक अभिव्यक्ति और बाद विवाद की पद्धति प्रगतिशील थी।
2. छात्रों के लिखित एवम् मौखिक कार्यो का दृश्य क्षव्य उपकरणों के माध्यम से प्रबल प्रेरण प्रदान की जाए, ताकि वे शुद्ध–शुद्ध उच्चारण करें, धारा – प्रवाह बोलना, सीखें, सशक्त और व्यावहारिक भाषा की ठोस जानकारी प्राप्त करें एवं साहित्यक प्रतिभा का विकास करें।
3. कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों द्वारा शिक्षण में कुशलता आती है। साथ ही शिक्षण और अधिक प्रभावशाली होता है। सूक्ष्म और कठिन भावों को विद्यार्थियों को सफेद बोर्ड पर प्रोजैक्टर की सहायता से सफलतापूर्वक समझाया जा सकता है।
4. पुराने प्रकार के हिन्दी शिक्षण में विद्यार्थी अरूचि पैदा करते है। अतः हिन्दी भाषा के उचित उच्चारण, व्याकरण तथा रोचक बनाने के लिए शिक्षण में विविधता लाना आवश्यक है। कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों द्वारा शिक्षण में विविधता लाई जा सकती है। और नीरसता खत्म कर सकते है।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

5. इन नीतियों के प्रयोग से सीखी हुई सामग्री विद्यार्थियों के मस्तिष्क में स्थायी रूप से अकित हो जाती है। उदाहरण के लिए गुरू नानक जी के बारे में केवल पढ़ेगें तो हम भूल सकते है। परन्तु यदि प्रोजैक्टर या सफेद बोर्ड या पावर पॉइट में उनके बारे में या उनके किए कार्यो को देखेगे तो उनके बारे में एकत्रित ज्ञान स्थायी हो जाएगा। हमें पाठ्य पुस्तकों को रटने की जरूरत नहीं होगी।
6. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए अध्यापक के साथ साथ विद्यार्थियों की सक्रियता भी इन नीतियों द्वारा बनी रहती है। इन नीतियों से ज्ञानन्द्रिया सक्रिय होती है। और कठिन से कठिन तथ्य को भी बडी आसानी से समझा जा सकता है।
7. हिन्दी शिक्षण में कुछ तथ्य या विषय सामग्री ऐसी होती है। जिसका ज्ञान बोलकर या बताकर कराने में अधिक समय लगता है। परन्तु उस वस्तु या पदार्थ को प्रत्यक्ष दिखा देने से बडी जल्दी वह बात समझ जा जाती है। उदाहरण के लिए संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि का यदि प्रत्यक्ष प्रयोग लिखा जाए तो हिन्दी व्याकरण को सही और कम समय में समझा जा सकता है।
8. हिन्दी शिक्षण के प्रमुख सूत्र 'स्थूल से सूक्ष्म की और ' तथा 'मूर्त से अमूर्त की ओर' की पालना शिक्षण सहायक सामग्री से की जा सकती है। इन साधनों के प्रयोग से विषय वस्तु से सम्बन्धित प्रत्यक्ष साधनों को दिखाया जाता है। जिससे कठिन से कठिन प्रत्ययों को समझने में सुविधा होती है। जीवन्त उदाहरणों के माध्यम से विषय रोचक बन जाता है। और शिक्षण प्रक्रिया भी सफल हो जाती है।
9. कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों से विषय वस्तु के स्पष्टीकरण में बहुत सहायता मिलती है। कुछ तथ्य ऐसे होते है। जिन्हें देख कर आसानी से समझा जा सकता है। उन्हें देख भी ले तो उनकी समस्त शंकायें दूर हो जाती है। और पाठ्य वस्तु सुबोध और सहज ग्राझा बन जाती है। उदाहरण के लिए यदि गुलाब के फूल के बारे में पढाने की अप्रेक्षा यदि उसे सफेद बोर्ड पर दिखाया जाए तो बच्चों को गुलाब के फूल के साथ साथ उसके रंग, रूप रेखा के बारे में स्पष्टीकरण अधिक होगा।
10. जब वस्तु इतनी बड़ी हो कि उसे कक्षा में न लाया जा सके जैसे : ताजमहल, कुतुबमीनार। जब दूर की वस्तुओं का ज्ञान देना हो जैसे देश विदेश के रीति रिवाजों या त्यौहारो आदि का ज्ञान देना हो। ऐसी सभी स्थितियों में कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों द्वारा विद्यार्थियों की जिज्ञासा शान्त की जा सकती है।
11. केवल मौखिक अभिव्यक्ति के द्वारा किये गए शिक्षण में विद्यार्थियों का ध्यान भटक जाने का भय रहता है। कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों की प्रयुक्ति विद्यार्थियों को एकाग्रचित बनाने में सहायक होती है। इनके प्रयोग से विद्यार्थी विषय वस्तु से बंध जाते है। पाठ में रूचि उत्पन्न हो जाने के कारण शिक्षण उद्वेश्यों की प्राप्ति में सुविधा हो जाती है।
12. कुशल अनूदेशनात्मक नीतियों के माध्यम से जब शिक्षक पढ़ाते है तो विद्यार्थी उन आकर्षक चार्टो, चित्रों और मॉडल देखकर स्वयं उनको बनाने की कोशिश करते है। इस प्रकार विद्यार्थियों में

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सृजनात्मक और रचनात्मक रूचियों का विकास होता है। हिन्दी शिक्षण का एक उद्वेश्य विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास करना है। जो कुशल अनुदेशनात्मक नीतियों द्वारा सम्भव है। ये नीतियां एक प्रेरणा स्रोत का काम करती है। जो विद्यार्थियों को नव निर्माण के लिए अभिप्रेरित करती है।

निष्कर्ष – कुशल अनुदेशनात्मक नीतियां अधिगम को प्राप्ति के लिए उचित युक्ति है। परन्तु यदि इन का बुद्विमतापूर्ण चयन एवं प्रयोग किया जाये, यह विद्यार्थियों में गहन एवं लाभप्रद रूचि जागृत एवं विकसित कर सकती है। और उन के अधिगम को अभिप्रेरित करती है। उचित रूप से अभिप्रेरित अधिगम का अर्थ परिष्कृत अभिवृतियां, स्थाई प्रभाव, सवृद्व अनुभव और अन्ततः अधिक परिपूर्ण जीवन और हिन्दी शिक्षण क्रम का आवश्यक अंग बन सकती है।

संदर्भ–

केशव प्रसाद (2004) हिन्दी शिक्षण, धनपत राय पब्लिशिंग कंपनी लिमिटेड, नई दिल्ली, पृठ 238–240
कुलश्रेष्ठ एस.पी. (2008), शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार, आगरा पब्लिकेशन्स, आगरा।
बराड़ सर्वजीत कौर (2011) हिन्दी अध्यापन, कल्याणी पब्लिशर्ज, लुधियाना । पृ. 274–276
वालिया जे.ए. (2010) शिक्षा तकनीकी, अहम् पाल पब्लिशर्ज, जालन्धर, पृ. 40– 42
पाल दुर्ग विजय और सिंह जय (2017) आगरा जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शैक्षिक तकनीकी उपयोग का अध्ययन, इन्टरने शनल जर्नरल शिक्षा अनुसन्धान, अंक 2(1) प1. 15–18 वर्ष जनवरी 2017, www.educationjournal.org
सावित्री सिंह (2006) हिन्दी शिक्षण, इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस मेरठ।
रविन्द्र अन्धारिया (2011), हिन्दी का अध्ययन, वरिषेण प्रकाशन
शेक्षिक प्रोद्योगिक विकिपीडिया
https://hi/m.wikipedia.org>wiki> शैक
शर्मा, आर.ए. (2008), शिक्षा के तकनीकी आधार, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
शिक्षा परिभाषा कोष (1986), वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा तथा समाज कल्याण मत्रांलय, भारत सरकार।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies